सरस्वती के बारे में जानने के लिए वेदों का अध्ययन जरूरी

By Publish Date:Tue, 31 Jan 2017 02:24 AM (IST) | Updated Date:Tue, 31 Jan 2017 02:24 AM (IST)

- वेदों में 15 शब्द जो साफ तौर पर बताते हैं सरस्वती के बारे में

- सरस्वती में एक नहीं बल्कि सात धाराएं हैं

सतीश चौहान, कुरुक्षेत्र

ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय कनाडा के संस्कृत के प्रोफेसर डॉ. अशोक अकलुजकर ने कहा कि भारतीय इतिहास को जानने के लिए वेदों को पढ़ना जरूरी है। उन्होंने वेदों का अध्ययन करने के बाद जाना है कि सरस्वती की गलत व्याख्या की गई है। वेदों महाकाव्य हैं और उनमें कहीं पर भी पूरा श्लोक नहीं, जिसमें सरस्वती के बारे में जिक्र हो। अलग-अलग जगह पर सरस्वती से जुड़े सिर्फ 15 शब्द हैं। इनमें से 10 शब्दों का सही अनुवाद भी नहीं किया गया है। इन्हीं से पता चलता है कि सरस्वती नदी कहां से चली थी और कहां तक जाती है।

प्रो. अकलुजकर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के भू-विज्ञान विभाग की ओर से सरस्वती नदी पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर वक्ता आए हैं। उन्होंने दैनिक जागरण से बातचीत में बताया कि सरस्वती के नाम का ही शाब्दिक अर्थ लिया जाए तो साफ होता है कि यह अनेकों प्रवाहों से जुड़कर बनी है। उन्होंने बताया कि वेदों के शब्दों का सही अनुवाद करने पर पता चलता है कि नदी सात धाराओं से मिलकर बनी थी, जिसमें उत्तरी हरियाणा में बहने वाली कई धाराएं शामिल थीं। इसके बाद भूकंप और जलवायु परिवर्तन के कारण ये धाराएं अवरुद्ध होती गईं।

महाभारत काल तक थी तीन धाराएं

उन्होंने बताया कि महाभारत में भी सरस्वती का वर्णन है। यहां तक आते-आते सरस्वती की तीन धाराएं बची थीं, जो सरस्वती, दृसद्ध और आपया हैं। आपया को बाद में आपगा कहा जाने लगा। उन्होंने बताया कि वेदों के अनुसार अरावली तक सरस्वती की यही धाराएं जाती थीं और साबरमती व अन्य नदियां भी इसी का हिस्सा थीं। उन्होंने कहा कि वेदों में बताया गया है कि सरस्वती शिवालिक से निकलती है यानि इसका उद्गम स्थल हिमालय था। वेदों में जिक्र है कि सरस्वती हिमालय से चलकर कच्छ तक जाती थी। हजारों साल के परिवर्तन के कारण जब राजस्थान का क्षेत्र ऊंचा उठा तो सरस्वती का प्रवाह उलटा हो गया, जिसके कारण कई धाराओं में बंटी सरस्वती मंद पड़ी और बाद में बंद हो गई।

संस्कृत, पाली और प्राकृत के बिना इतिहास जानना नामुमकिन

डॉ. अशोक का कहना है कि 19वीं शताब्दी में भारत में अंग्रेजी को पढ़ने की होड़ बढ़ी थी, जो आज तक कायम है। भारतीय इतिहास संस्कृत, पाली और पाकृत भाषाओं में हैं। ऐसे में बिना इन तीनों भाषाओं के ज्ञान के बिना लोग भारतीय

इतिहास को नहीं जान सकते हैं। कई बार ऐसा हुआ है कि अंग्रेजी की पुस्तकों को पढ़कर भारतीय इतिहास के बारे में लोग अपने विचार रखते हैं, लेकिन ऐसा संभव नहीं है, क्योंकि कई बार संस्कृत का अनुवाद करने वाले विद्वानों ने अपनी सहुलियत के अनुसार उसका अनुवाद किया है, जिससे इतिहास बदल जाता है।

http://www.jagran.com/haryana/kurukshetra-important-to-study-the-scriptures-to-learn-about-muse-15455855.html